गलाघोंटू रोग है जानलेवा !!!!!!

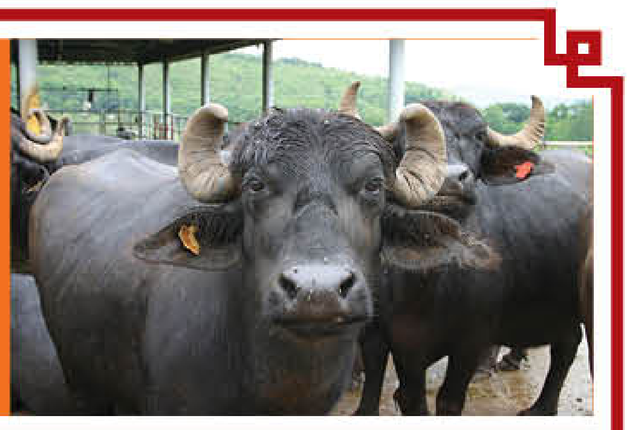

गलाघोंटू गाय, भैंस, भेड़ और बकरीयों को ग्रासित करने वाला जीवाणुजनित घातक रोग है
यह पास्चरेला माल्टोसीडा जीवाणु के संक्रमण के कारण होता है

संचरण

- श्वसन के मार्ग से
- ग्रसित पशुओं के संपर्क में आना
- कम जगह में ज्यादा पशुओं को रखने से
- अधिक दूरी तक पशुओं का परिवहन करना

गलाघोंटू के जीवाणु स्वस्थ पशु के श्वसन तंत्र में निष्क्रिय अवस्था में पहले से मौजूद रहते है जो तनाव के कारण जैसे मौसम परिवर्तन, कम जगह पर ज्यादा पशुओं के रखने, फार्म पर अमोनिया बनने तथा लंबी दूरी तक परिवहन से सक्रिय हो जाते है

रोग का प्रकोप मुख्यत: वर्षा काल के आने के साथ होता है जब वातावरण मे गर्मी और नमी ज्यादा होती है

पशुओं में रोग के लक्षण

तेज बुखार

नाक से स्राव

गले के नीचे सूजन

नियंत्रण

- संक्रमित पशुओं को अलग रखे
- प्रभावित जानवरों का इलाज कराये
- संक्रमित पशुओं को पशु बाजार में न ले जाए
- प्रतिकूल मौसम में पशुओं के लंबी दूरी की परिवहन से बचें
- संक्रमित पशुओं के संपर्क मे आए चारे को स्वस्थ्य पशुओं को न खिलाये तथा उसे नष्ट कर दे

सांस लेने में तकलीफ

टीकाकरण

- टीकाकरण अवश्य कराये और अपने पशुओं को गलाघोंटू से बचाए
- ऑयल अड्जुवेंट टीका चमड़ी के नीचे मानसून से पहले हर साल या
- एलम पृसीपीटेट टीका चमड़ी के नीचे मानसून से पहले हर साल
- अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे

उपचार

यह रोग बड़ा ही जानलेवा होता है उपचार न मिलने पर 24-48 घंटे के अंदर पशु की मृत्यु हो जाती है

इसलिए पशुओं में रोग के लक्षण दिखाने देने पर अपने नजदीकी **पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करे तथा पशुओं का इलाज कराये**

फोटो स्रोत : इन्टरनेट

भाकृअनुप
ICAR

भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक
फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in

रापजासूविसं
NIVEDI